छायावादी काव्य-दृष्टि और निराला

काशी विद्यापीठ

की

पी-एच० डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

१६७६ ई०

डा० व्रजविलास श्रीवास्तव
एम० ए०, पी-एच० डी०
निर्देशक
रीडर, हिन्दी-विभाग
काशी विद्यापीठ

प्रस्तुतकर्ता
हरद्वार
एम० ए० (अंग्रेजी, हिन्दी)
बी० ए० (आनर्स)

हिन्दी विभाग
काशी विद्यापीठ
वाराणसी

Dr. Ramkumar Varma's copy
Report and Rem. sent
on 22.11.79
RKVarma

छायावादी काव्य-दृष्टि और निराला

काशी विद्यापीठ

की

पी-एच० डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

अग्रसारित
ब्रजविलास श्रीवास्तव
१४.५.८

१९७८ ई०

डा० व्रजविलास श्रीवास्तव

एम० ए०, पी-एच० डी०

निर्देशक

रीडर, हिन्दी-विभाग

काशी विद्यापीठ

प्रस्तुतकर्ता

हरद्वार

एम० ए० (अंग्रेजी, हिन्दी)

बी० ए० (आनर्स)

हिन्दी विभाग

काशी विद्यापीठ

वाराणसी

प्रमाणित किया जाता है कि श्री हरबार ने हिन्दी विभाग, काशी विद्यापीठ के शोध छात्र के रूप में 'छायावादी काव्यदृष्टि और निराला' विषय पर मेरे निर्देशन में दो वर्षों तक शोध कार्य किया है। प्रस्तुत प्रबन्ध उनकी मौलिक कृति है। यह प्रबन्ध निराला के काव्य विवेचन की दिशा में एक नया और मौलिक प्रयास है।

(कृष्णबिहारी श्रीवास्तव)

निर्देशक

प्राक्कथन

छायावाद आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली काव्य के विकास की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और उसके अमर उन्नायकों में महाप्राण निराला का एक विशिष्ट स्थान है। अधिकांश आलोचक यह स्वीकार करते हैं कि छायावादी काव्य धारा के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ ही निराला ने अपनी काव्य-प्रवृत्तियों - विशेष रूप से वस्तु-विस्तार, शिल्प वैविध्य, भाषा और और जीवन मूल्यों - की दृष्टि से छायावाद की तथाकथित काव्यदृष्टि का विस्तार भी किया है। यही कारण है कि निराला का काव्य - व्यक्तित्व अन्य छायावादी कवियों से बिल्कुल अलग दिखाई पड़ता है और उनकी सम्पूर्ण काव्य रचनाओं को पढ़ने के पश्चात् उन्हें शुद्ध छायावादी मानकर उनका मूल्यांकन करना कठिन प्रतीत होता है। न केवल प्रवृत्तियों बल्कि विषयवस्तु और भाषा शिल्प की दृष्टि से भी निराला तथाकथित छायावादी सीमा में नहीं बंध पाते हैं। इसमें संदेह नहीं कि छायावाद की सामान्य प्रवृत्तियां निराला में भी हैं और छायावाद के अन्य कवियों की तरह ही युगीन प्रभाव से वह भी प्रभावित हुए हैं। वैयक्तिकता, अन्तर्मुखता, काव्यवस्तु तथा काव्य शिल्प की स्वच्छन्द प्रवृत्ति आदि की दृष्टि से स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियां निराला में भी है, किन्तु जिसे निराला का स्वतंत्र काव्य वैशिष्ट्य कहा जाता है वह इन प्रवृत्तियों से बंधे रहने में नहीं बल्कि उन्हें तोड़ने में है। अपने काव्य विकास के दौरान निराला ने परम्परित काव्य प्रतिमानों को ही नहीं तोड़ा है, बल्कि छायावाद की सीमा में रहते हुए भी उन प्रतिमानों को भी तोड़ा है जिनके निर्माण में उनका स्वयं योगदान रहा है। इसीलिए छायावाद के बाद जब प्रगतिवादी आन्दोलन आया तो निराला को तथाकथित प्रगतिवादी आलोचक भी पलायनवादी नहीं घोषित कर सके। इसके विपरीत कई प्रगतिवादी कवियों और आलोचकों को प्रगतिवाद का बीज निराला में दिखाई पड़ा।

इसी प्रकार काव्य - शिल्प संबंधी प्रयोगों को महत्वपूर्ण मानकर चलाये गये प्रयोगवादी आन्दोलन के प्रवर्तक भी निराला को अपनी परम्परा का कवि मानते हैं। कई प्रयोगवादी कवि और आलोचक तो यहाँ तक कहते दिखाई पड़ते हैं कि प्रयोगवादी कविता का मूल बीज निराला की रचनाओं में ही बो दिया गया है। किन्तु सर्वविदित तथ्य है कि निराला न तो प्रगतिवादियों की तरह मार्क्सवादी या गांधीवादी विचारधारा के अनुयायी थे और न तो अज्ञेय की यौन वर्जना या शुद्ध प्रयोग धर्मिता के ही। अतः इससे केवल इतना ही प्रमाणित होता है कि निराला का काव्य - विकास किसी वाद या प्रवृत्ति विशेष के संकुचित दायरे में बंधकर नहीं हुआ है। उनकी स्वच्छन्द काव्य - प्रतिभा स्वच्छन्दतावाद की सामान्य काव्य प्रवृत्तियों का भी अतिक्रमण करती दिखाई पड़ती है।

निराला के व्यक्तित्व और काव्य के संबंध में अभी तक कई आलोचनात्मक तथा शोध ग्रन्थ लिखे गये हैं, किन्तु इस दृष्टि से उन पर अभी तक विचार नहीं किया गया। परिणामतः निराला के काव्य व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन नहीं हो सका। निराला - विषयक कई ग्रन्थों में उनकी सामान्य विशेषतायें बतलाई गयी हैं और कुछ में छायावाद की पृष्ठभूमि में रखकर निराला को मूल्यांकित किया गया है। एक ऐसा ही शोध प्रबन्ध डा० (कु०) शान्ति श्रीवास्तव का 'छायावादी काव्य और निराला' है। इसमें विदुषी लेखिका का उद्देश्य 'छायावादी काव्य का सम्यक् अध्ययन' तथा 'निराला काव्य का पृथक् अध्ययन' रहा है। इससे यह नहीं पता चलता है कि निराला किस हद तक छायावादी काव्य प्रवृत्तियों से बंधकर चलते हैं और कहाँ उन्होंने अपने युग द्वारा निर्मित काव्य प्रतिमानों को तोड़कर नये प्रतिमान गढ़ने का प्रयास किया है।

वस्तुतः निराला पर अब तक जितने भी कार्य हुए हैं, उनमें छायावाद की मूल काव्य दृष्टि को ध्यान में रखकर उनकी समानान्तरता में न तो निराला के निबंधों और वक्तव्यों के आधार पर उनकी काव्यदृष्टि को समझा गया है और न तो इस दृष्टि से उनकी रचनाओं का ही मूल्यांकन किया गया है।
निराला छायावाद के सामान्य प्रतिमानों से कहाँ बंधे हैं, कितने प्रतिमान

उन्होंने स्वयं निर्मित किए हैं और न केवल छायावाद के बल्कि स्वनिर्मित प्रतिमानों को भी काटते हुए उन्होंने कहां तक अपने काव्य का विकास किया है, इस दृष्टि से अभी तक निराला का मूल्यांकन नहीं किया गया है। अतः निराला के सम्पूर्ण काव्य-व्यक्तित्व को समझने के लिए आवश्यक है कि छायावादी काव्य की समानान्तरता में उनकी काव्यदृष्टि को, उनके रचनात्मक मूल्य को विवेचित और व्याख्यायित किया जाय। प्रस्तुत प्रबन्ध इसी दिशा में एक प्रयास है। जब तक ऐसा नहीं किया जाता, तब तक सात अंधों द्वारा वर्णित हाथी के प्रमाण की भांति निराला - प्रमाणित होते रहेंगे और उनकी भिन्न - भिन्न प्रवृत्तियों और शैलियों वाली रचनाओं के आधार उन्हें वादों के छोटे - छोटे दायरे में ही समझा जाता रहेगा, जबकि सम्पूर्णता को प्राप्त करने का प्रयास करने वाला कवि न दायरों में बंधा रहता है और न दायरों में उसका मूल्यांकन ही हो सकता है। निराला यदि स्वच्छन्द थे, उनकी काव्यदृष्टि पूर्ण थी तो इस अर्थ में कि वे अपनी परम्परा, अपने युग और अपने व्यक्तित्व आदि सबको समेटते हुए भी उनसे बाहर रहकर स्वच्छन्द बने रहे हैं।

निराला के साथ छायावाद का संबंध ऐतिहासिक भूमिका पर बना था, परन्तु आरम्भ से ही उनकी स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियां उनको छायावाद की सीमित भूमि से बाहर खींच रही थीं। इस प्रकार वे किसी वाद के विवाद में न पड़कर, उसके संकुचित दायरे में न बंधकर, बादल के समान "निर्बन्ध" और "स्वच्छन्द" रहे हैं। उनके काव्य में उनका यह स्वच्छन्दतावादी दृष्टिकोण कभी तिरोहित नहीं हुआ। प्रस्तुत प्रबन्ध में इस बात को ध्यान में रखते हुये निराला का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

छायावादी काव्यदृष्टि की समानान्तरता में निराला की काव्य दृष्टि को समझने के लिए सर्वप्रथम "काव्यदृष्टि" के निरूपणार्थ उसके दो विभाग किये गये हैं - सैद्धान्तिक और व्यावहारिक। सैद्धान्तिक दृष्टि के अन्तर्गत निम्न विषय समाविष्ट हैं:-

(१) काव्य का स्वरूप

(२) काव्य का उद्देश्य

(३) काव्य के उपादान

(४) काव्य-रूप

(५) काव्य-वस्तु और

(६) काव्य-शिल्प ।

इनके भी निरूपणार्थ दो विधियाँ अपनायी गयी हैं – प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष । प्रत्यक्ष प्रतिपादन के अन्तर्गत छायावादी कवियों के विचारों का चयन किया गया है जो उनके ग्रंथों और वक्तव्यों में प्रकीर्ण हैं । अप्रत्यक्ष विधि में उनकी रचनाओं की पंक्तियों और आलोचकों के विचारों का समावेश है । काव्य दृष्टि विषयक इस सैद्धान्तिक निरूपण के पश्चात् उसके व्यावहारिक रूप पर भी विचार कर अंत में निष्कर्षों का प्रतिपादन किया गया है ।

इस आधार पर मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है । प्रथम अध्याय है – 'छायावाद पूर्व आधुनिक काव्यदृष्टि' । इसमें भारतेन्दु और द्विवेदी युग की काव्य दृष्टियों का संक्षिप्त विवरण – सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से प्रस्तुत किया गया है । इस अध्याय का मूलोद्देश्य यह दिखलाना है कि ये युग और उनके ~~विविध~~ साहित्य किस प्रकार छायावाद के लिए स्वच्छन्दतावादी पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं और इनमें पायी जानेवाली साहित्यिक प्रवृत्तियाँ कैसे छायावाद के रूप में अपना विकास करती हैं । छायावादी काव्य सहसा ही उद्भूत नहीं होता, अपितु उसका आविर्भाव कुछ-कुछ इन्हीं युगों में हो चुका था जिसकी झलक इस युग के साहित्य में मिलती है । यही प्रस्तुत अध्याय में विवेचित है ।

द्वितीय अध्याय में छायावाद युग की पृष्ठभूमि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है क्योंकि कोई भी युग समसामयिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं रह सकता और छायावादी काव्य भी इसका अपवाद नहीं है । इसी दृष्टि से यह विवेचन आवश्यक समझा गया । यद्यपि लेखक इस अध्याय में किसी मौलिकता का दावा नहीं करता, तब भी छायावाद के सही परिप्रेक्ष्य को सही ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास अवश्य किया गया है ।

तृतीय अध्याय से मुख्य विषय प्रारम्भ होता है । इसमें छायावादी काव्य दृष्टि का निरूपण किया गया है । इस अध्याय के अन्तर्गत ये उपशीर्षक हैं:- काव्य का स्वरूप, काव्य के उपादान, काव्य के उद्देश्य, काव्य वस्तु, मूल्य दृष्टि चिन्तन दृष्टि और काव्य शिल्प । प्रत्येक उपशीर्षक के अन्तर्गत सर्वप्रथम छायावादी कवियों के विचारों का अध्ययन किया गया है । इनमें भी छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भ - प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा - के विचारों का मुख्य रूप से और डा0 रामकुमार वर्मा प्रभृति, छायावादी कवियों के विचारों का गौण रूप से आकलन किया गया है । आवश्यकतानुसार प्रत्येक उपशीर्षक के अन्तर्गत आंग्ल रोमांटिक कवियों के विचारों का भी उनके काव्यों और गद्य रचनाओं से उद्धरण प्रस्तुत करते हुए उनकी समानान्तरता में भी छायावादी कवियों के सिद्धान्तों और व्यवहारों को परखा गया है । ऐसा इसलिए करना पड़ा क्योंकि छायावादी कवियों पर आंग्ल रोमांटिक कवियों का प्रभाव भी पड़ा था । अतः इनके तुलनात्मक विवेचन के बिना हमारा यह अध्ययन अपूर्ण - सा रहता । इसके पश्चात् आलोचकों के मतों का भी समाधान प्रस्तुत किया गया है । यह तो सैद्धान्तिक दृष्टि रही और इसके पश्चात् छायावादी काव्य का उस विषय से संबंधित व्यावहारिक विश्लेषण करके देखा गया है कि इन कवियों के सिद्धान्त व व्यवहार में कहाँ तक अनुरूपता है और कहाँ तक नहीं । और तब अंत में प्रत्येक उपशीर्षक वाले अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्ष भी निकाले गये हैं ।

शिल्प के अन्तर्गत भाषा, अलंकार, छन्द और गीत शिल्प का अध्ययन है । यहाँ भी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से निरूपण किया गया है । साथ ही साथ यह भी ध्यान रखा गया है कि छायावाद के इन उपर्युक्त चार कवियों में किसकी विशिष्टता किस बात में है ।

काव्य रूपों को भारतीय और पाश्चात्य दोनों दृष्टियों से समझा - परखा गया है । छायावादी काव्य रूपों में नवीन काव्य रूपों का भी समावेश है जिनपर कहीं प्राचीन भारतीय काव्य रूपों की, तो कहीं पाश्चात्य काव्य रूपों की छाप है और कहीं कहीं दोनों की । अतः उनका विवेचन और विभाजन स्वतंत्र रूप में किया गया है ।

इन समस्त विवेचनों के बाद समस्त रूप में `छायावादी काव्य दृष्टि : एक निष्कर्ष` प्रस्तुत किया गया है। छायावादी काव्य दृष्टि, अन्तर्मुखी, विषयी निष्ठ और प्रकृत है। उसके प्रकृत दृष्टिकोण के कारण उसमें नित नूतन प्रयोग, परम्परा - विद्रोह और नव-सृजन आदि प्रवृत्तियों का विकास होता रहा है। इस प्रकार यहां छायावादी काव्य दृष्टि के कुछ मुख्य प्रतिपादनों को सूत्ररूप में प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में निराला की काव्यदृष्टि पर विचार किया गया है। यहां भी उपशाखाओं की योजना वैसी ही है जैसी कि पूर्व अध्याय में। यहां निराला की काव्य दृष्टियों के साथ पूर्व निरूपित छायावादी काव्य दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर दोनों में कितना साम्य और वैषम्य है इस पर प्रकाश डाला गया है। निराला कहां तक छायावाद की काव्य परिधि में बंधे हैं और कहां उससे बाहर जाते हैं, यही दिखलाना इस अध्याय का मुख्य लक्ष्य रहा है। जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है कि निराला के काव्य - व्यक्तित्व के निर्माण में कुछ ऐसे परमाणुओं योग है जो उन्हें छायावाद की सीमित परिधि से बाहर कर देते हैं। निःसंदेह निराला की काव्यदृष्टि में उन तत्वों का समावेश है जो छायावादी काव्यदृष्टि में नहीं है। उदाहरण के लिए जहां छायावादी काव्य दृष्टि में अन्तर्मुखता प्रधान है वहीं निराला में उसके साथ बहिर्मुखता भी पर्याप्त मात्रा में है। इस प्रकार निराला छायावादी - परिधि में नहीं बंधे यद्यपि वे उससे असम्पृक्त भी नहीं हैं। यही प्रस्तुत अध्याय का मूल उद्देश्य रहा है। इस अध्याय में निराला की काव्य दृष्टि के संबंध में एक निष्कर्ष भी प्रस्तुत किया गया है। सिद्धान्त और व्यवहार की इन विविधताओं के बाद निराला की काव्य दृष्टि प्रकृत रही है, इसलिए उन्हें स्वच्छन्दतावादी भी कह सकते हैं। कतिपय आलोचक उनके काव्य - व्यक्तित्व के तारतम्य, विषय वैविध्य और प्रयोग बहुलता में उनकी विक्षिप्तता के दर्शन करते हैं। उन्हें निराला की काव्य दृष्टि में कोई ऐसा एक सूत्र अनुस्यूत नहीं मिलता जो उनके काव्य विकास के समस्त रहस्यों को खोल दे। यहां निराला की काव्य दृष्टि को समग्रता में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अंतिम अध्याय में छायावादी काव्यदृष्टि के सन्दर्भ में निराला की काव्य दृष्टि का अध्ययन किया गया है। यहां छायावादी काव्य दृष्टि में निराला की विशिष्टता के उद्‌घाटन के साथ ही सम्पूर्ण प्रबन्ध में एक संतुलन लाने की चेष्टा की गयी है। यहां निराला की काव्य दृष्टि की उन विशेषताओं की ओर संकेत है जो अन्य छायावादी कवियों में नहीं मिलती है। निराला ही वह छायावादी कवि हैं जिनमें भाव और बुद्धि का संतुलन, व्यापक संवेदना, शक्ति, पौरुष, ओज और विद्रोह एक साथ मिलते हैं। उन्होंने छायावादी काव्य को महाकाव्यात्मक औदात्य प्रदान किया। उनके मानवतावाद में जनवादी रूप मिलता है। निराला ने ही छायावाद को सांस्कृतिक परिवेश दिया और उसे अद्वैतवाद का दिव्य रूप से आलोकित किया। मुक्त छन्दों के तो वे पुरोधा थे ही, साथ - ही - साथ गीतों का जो विविध रूप और प्रयोग निराला में दर्शनीय है वह अन्य छायावादी कवियों में नहीं।

तात्पर्य यह कि निराला ने छायावादी काव्य को बहुत कुछ ऐसा दिया है जो छायावाद के लिए नया है। छायावादी काव्य के साथ उनका ऐतिहासिक संबंध तो है ही, उसके साथ - ही - साथ उन्होंने छायावादी काव्य को उसकी संकुचित परिधि से बाहर निकाल कर उसे व्यापकता और वैविध्य प्रदान किया। छायावादी काव्य में निराला की मान्यताओं का स्वतंत्र और ऐतिहासिक महत्व है।

अंत में विद्वन्मूर्धन्य पूज्य डा० केशव प्रसाद सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी विद्यापीठ, का मैं आनत शिर अभिवादन करता हूं जिन्होंने विघ्नेश्वर के समान हमारे मार्ग के अवरोधों को दूर कर आज हमें शोध - प्रबंध लिखने के स्तर तक पहुंचा दिया है। इसके लिए मैं उनका आजीवन ऋणी रहूंगा।

अपने शोध निर्देशक पूज्य गुरुवर डा० ब्रजविलास श्रीवास्तव, रीडर, हिन्दी विभाग, काशी विद्यापीठ, के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिनकी महती प्रेरणा, अमूल्य समय दान और सत्-परामर्श निर्देशनों ने रश्मि-कर बनकर मेरा पथ आलोकित किया। इसके अतिरिक्त मैं डा० हरिशंकर प्रसाद सिंह और अन्य साथियों का बड़ा कृतज्ञ हूं जिन्होंने

अपने उचित परामर्श से मुझे विशेष अनुगृहीत किया है। ममतामयी मां, पूज्य पिताजी और भैया श्री केदारनाथ के प्रति भी मेरी प्रणति है जिन्होंने गृह के प्रपंचों से मुक्ति देकर मेरे लिए अध्ययन का मार्ग प्रशस्त रखा है।

श्री लाजपत स्मारक साहित्य सदन मीरजापुर के पुस्तकालयाध्यक्ष पं० नरसिंह नारायण तिवारी जी के प्रति भी आभार प्रदर्शित किये बिना मैं नहीं रह सकता क्योंकि अपने कार्याधिक्य की चिन्ता किए बिना उन्होंने सदैव मेरी सहायता की है। आर्य भाषा पुस्तकालय काशी, काशी विद्यापीठ भगवानदास स्वाध्यायपीठ, केन्द्रीय ग्रन्थालय (बी०एच०यू०) और नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता से भी मुझे सहायता मिली है, इसलिए इनके उपकारों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूं।

हिन्दी जगत के समस्त मनीषी विद्वानों और सुधी जनों का भी मैं अभिवादन करता हूं जिनकी रचनाओं, विचारों और आलोचनाओं से मैंने प्रेरणा और यथास्थान सहायता ली है।

हरद्वार
(हरद्वार)

शिवरात्रि
२५-२-१९९६

विषय - सूची

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन — क - ञ

प्रथम अध्याय : छायावाद पूर्व आधुनिक काव्यदृष्टि — १ - ८५

(१ - ४७)

क - भारतेन्दु युग

१ - पृष्ठभूमि - राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक साहित्यिक परिस्थितियाँ ।

२ - काव्यदृष्टि - सैद्धान्तिक दृष्टि - काव्य के वर्ण्य विषय, काव्य की आत्मा, काव्य-हेतु और प्रयोजन, काव्य शिल्प, निष्कर्ष ।

व्यावहारिक पक्ष - विषयगत दृष्टि - परम्परागत वर्ण्य- भक्ति, शृंगार या प्रेम, काव्य के नवीन वर्ण्य - राजभक्ति, देशभक्ति, सामाजिक व धार्मिक सुधार, व्यंग्य व हास्य काव्य, स्वच्छन्दतावादी काव्य ।

काव्य रूप - प्रबन्ध काव्य, पद्यात्मक निबंध, गीत मुक्तक, संगीत पद्धति के गीत - लोक गीति, संबोधन गीति, चतुर्दशपदी, व्यंग्य काव्य, वर्णनात्मक काव्य ।

शिल्प दृष्टि भाषा, शैली और छन्द ।

(४८ - ८५)

ख - द्विवेदी युग

१ - युग व प्रेरक शक्तियाँ - प्रेस व पत्रकारिता, सांस्कृतिक आन्दोलन, राजनीतिक परिस्थितियाँ, अंग्रेजी शिक्षा, साहित्यिक संस्थाएं और सभाएं, आधुनिक भारतीय साहित्यों का प्रभाव ।

२ - काव्य दृष्टि - सैद्धान्तिक पक्ष - काव्य का स्वरूप, काव्य की आत्मा, काव्य का प्रयोजन, कवि के साधन, वर्ण्य-विषय, भाषा, अलंकार, छन्द

व्यावहारिक (प्रयोगात्मक पक्ष) - काव्य-विषय - सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति और प्रेम प्रधान कविताएं ।

पृष्ठ संख्या

प्राचीन विषयों के प्रति नवीन दृष्टि - पौराणिक ईश्वरीय चरित्रों के मानवीयकरण की दृष्टि, विश्व-कल्याण और लोक मंगल, मानवीय मूल्यों की स्थापना, नारीत्व की उच्च उद्भावना स्वच्छन्दतावादी काव्य ।

काव्य रूप - प्रबन्ध, खण्डकाव्य, महाकाव्य

मुक्तक काव्य - सौन्दर्य व्यंजनात्मक, उपदेशात्मक, समस्यापूर्ति, गीति काव्य - वर्गीकरण

शिल्प दृष्टि - भाषा और छन्द

द्वितीय अध्याय : छायावाद. युगपृष्ठभूमि ८६-१०३

राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक - संस्कृत साहित्यगत पृष्ठभूमि, रीतिकालीन काव्य की [illegible] ।
अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ ।
छायावाद का उद्भव ।

तृतीय अध्याय : छायावादी काव्य दृष्टि १०४-३५३

हिन्दी काव्य की उत्तरोत्तर अन्तर्मुखता, विविध काव्यांगों पर उसका प्रभाव

क - काव्य का स्वरूप - प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी के विचार, आंग्ल रोमांटिक कवियों के विचार - वर्ड्सवर्थ, कालरिज, शैली, कीट्स, निष्कर्ष । (१०४-१२८)

ख - काव्य के उपादान - प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की धारणा, आंग्ल रोमांटिक कवियों के विचार, निष्कर्ष । (१२८-१६२)

१ - अनुभूति

२ - कल्पना - हिन्दी व अंग्रेजी छायावादी या रोमांटिक कवियों के विचार छायावादी काव्य में कल्पना का स्वरूप

ग - काव्य के उद्देश्य - भारतीय मत, पाश्चात्य मत, छायावादपूर्व हिन्दी साहित्यानुसार, छायावादी कवियों के मत :- प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा (१६३-१९८)

निष्कर्ष - आनंद और लोक मंगल ।

क - छायावादी काव्य में आनन्द

ख - छायावादी काव्य में लोक मंगल ।

पृष्ठ संख्या

घ - काव्य वस्तु - प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी और डा० रामकुमार वर्मा प्रभृति के मत, आंग्ल कवियों के मत, निष्कर्ष। (२७६-२८४)

१ - छायावादी काव्य में प्रकृति - प्रकृति चित्रण की पीठिका, प्रकृति चित्रण प्रणाली - आलम्बन, मानवीकरण पृष्ठभूमि, अलंकृत, उद्दीपन, रहस्य, प्रतीक, दृष्टान्त एवं उपदेशक रूप में।

२ - छायावादी काव्य में सौन्दर्य - छायावादी कवियों के सौन्दर्य विषयक अनुसार, छायावादी काव्य में सौन्दर्य-अंकन के दो रूप - विषयगत और स्वगत।

३ - छायावादी काव्य में प्रेम भावना - प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की प्रणय अनुभूतियां।

४ - छायावादी काव्य में नारी - देवी का प्रणयिनी रूप, पत्नी रूप, माता रूप, नारी का विकृत रूप, निष्कर्ष।

५ - अन्य विषय - विद्रोह, मानवतावाद, राष्ट्रीयता।

ङ - छायावादी मूल्य दृष्टि - (२८५-२९१)

१ - मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा या नव मानवतावाद

२ - व्यक्तिवाद

३ - मनोवैज्ञानिक मूल्य दृष्टि

४ - सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य दृष्टि

च - छायावादी काव्य की चिन्तन दृष्टि - (२९२-३०५)

१ - वैदिक - दर्शन

२ - औपनिषदिक विचारधारा

३ - शैव - दर्शन

४ - बौद्ध दर्शन

५ - आधुनिक भारतीय विचारकों के दर्शन विवेकानन्द, रवीन्द्र, अरविन्द, गान्धी दर्शन, निष्कर्ष

पृष्ठ संख्या

छ - छायावादी काव्य-शिल्प - (२६९-३३९)

१ - भाषा - शिल्प - कवियों के मत, उदारवादी दृष्टि, स्वतंत्र शब्द शिल्प दृष्टि, अर्थ-विवेक दृष्टि, ग्राम्यशब्दों की स्वीकार-दृष्टि, गुणदृष्टि, वृत्तिदृष्टि, शब्दशक्ति दृष्टि, वर्ण - लय, शब्द और वाक्य - योजना दृष्टि - व्याकरण उल्लंघन, निष्कर्ष।

२ - अलंकार शिल्प - सैद्धान्तिक दृष्टि और व्यावहारिक दृष्टि - भारतीय अलंकारों के प्रति, आंग्ल अलंकारों के प्रति।

३ - प्रतीक - विधान - छायावादी कवियों के मत, प्रतीकों के स्रोत व वर्गीकरण।

४ - छन्द विधान - सैद्धान्तिक निरूपण, मुक्त छन्दों का विवेचन - पंत की दृष्टि, निराला की दृष्टि - निष्कर्ष। वर्णिक आधार, मात्रिक आधार

५ - काव्य रूप - सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दृष्टि - निष्कर्ष

१ - प्रबन्ध काव्य - (क) महाकाव्य: परम्परागत मान्यताएं और कामायनी, व्यावहारिक दृष्टि, छायावादी महाकाव्य : कामायनी (ख) खण्ड काव्य - तुलसीदास राम की शक्ति पूजा, ग्रन्थि, उवर

२ - मुक्तक काव्य - गीति मुक्तक, प्रगीत मुक्तक, प्रगीतों का वर्गीकरण - आंग्ल पद्धति के प्रभाव, बंग पद्धति के प्रभाव, उर्दू शैली के प्रभाव, लोक गीतों की पद्धति के प्रभाव।

ज - छायावादी काव्य दृष्टि - निष्कर्ष। (३४०-३५३)

चतुर्थ अध्याय : निराला की काव्य दृष्टि 354-429

क - काव्य का स्वरूप और उद्देश्य - काव्य की परिभाषा, कवि, काव्य - प्रकृति, काव्य और व्यक्तित्व, काव्य के उपादान काव्य का उद्देश्य। (354-369)

ख - निराला की काव्य वस्तु दृष्टि - विचार-दृष्टि, व्यावहारिक काव्य वस्तु दृष्टि - वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय। (369-393)

बहिर्मुखता और छायावादी काव्य वस्तु का अतिलंघन।

पृष्ठ-संख्या

ग - निराला की शिल्प दृष्टि - (३६३-४१०)
१ - भाषा दृष्टि
२ - अलंकार दृष्टि - सिद्धान्त और प्रयोग
३ - छन्द दृष्टि - सममात्रिक मात्रानुप्रास छन्द, अर्द्धसममात्रिक मात्रानुप्रास छन्द, विषममात्रिक मात्रानुप्रास छन्द, विषम, मुक्त या स्वच्छन्द छन्द, संगीतात्मक छन्द, हिन्दीतर काव्य परम्परा के छन्द।
४ - गीत - शिल्प

घ - निराला का काव्य दृष्टि - एक निष्कर्ष (४११-४२६)

पंचम अध्याय : छायावादी काव्य के सन्दर्भ में निराला का वैशिष्ट्य ४२७-४४१

कोरी भावुकता से मुक्ति, भावना की अपेक्षा बौद्धिकता का प्राधान्य, व्यापक संवेदना, निराला का आलोचनात्मक एवं विद्रोही दृष्टि, छायावाद के नैराश्य, कल्पना - प्राधान्य, रहस्यिकता और पलायनवाद आदि दोषों का परिहार, निराला का मानवतावाद, सांस्कृतिक परिवेश और व्यापक दृष्टि।
शिल्पगत वैशिष्ट्य - नवोन्मेषात्मक औदात्य, छन्दोमुक्ति, गीत वैशिष्ट्य, (४४२-४४७)
उपसंहार -
सहायक ग्रन्थ सूची